

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षक— शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक छात्राध्यापक को इस प्रकार समर्थ बनाना है कि वह—

- बच्चों का ख्याल रख सकें और उनके साथ रहना पसंद करे।
- सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।
- व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने को अधिगम अर्थात् सीखना समझें।
- सीखने के तरीके समझें, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जानें तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों के आधार पर विद्यार्थियों की विभिन्नताओं को समझें।
- ज्ञान को, चिंतनशील सीखने की सतत् उभरती प्रक्रिया मानें।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के वाढ़ा ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।
- उन सामाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हो जिनमें उसे काम करना है।
- ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे, समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकें।
- वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदासी वाले रवैये को अपनाने की उपयुक्त योग्यता का विकास करे बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण करने के भी योग्य बने।
- उसके भाषायी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो।
- व्यक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मबोध, क्षमताओं, अभिरूचियों आदि की पहचान कर सकें।
- अपना पेशेवर उन्मुखीकरण करने के लिए सेच समझ कर प्रयास करता रहे। यह विशेष परिस्थितियाँ अध्यापक के रूप में उसकी भूमिका तय करने में मदद करेंगी।

डिलोमा इन एजुकेशन (डी.एड.) प्रथम वर्ष हेतु

विषय – बाल विकास और सीखना



प्रकाशन वर्ष – 2010

निःशुल्क वितरण हेतु



राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छत्तीसगढ़